भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद सोसायटी की 85वीं वार्षिक आम बैठक

85th ANNUAL GENERAL MEETING OF THE ICAR SOCIETY

श्री तारिक अनवर

केन्द्रीय कृषि एवं
खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री
का अभिभाषण

Address by

SHRI TARIQ ANWAR

Union Minister of State for Agriculture and
Food Processing Industries

15 जनवरी 2014
15 January 2014

स्थान : राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर,
देव प्रकाश शास्त्री मार्ग, नई दिल्ली
Venue : National Agricultural Science Centre Complex
Dev Prakash Shastri Marg, New Delhi

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि भवन, नई दिल्ली
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
KRISHI BHAVAN, NEW DELHI

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री और भाकृअनुप सोसायटी के अध्यक्ष श्री शरद पवार जी, राज्यों के कृषि मंत्री एवं भाकृअनुप सोसायटी के अन्य सदस्य, भाकृअनुप के शासी निकाय के सदस्य, मेरे साथी, राज्य मंत्री डॉ. चरणदास महंत; डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप; श्री अरविन्द कौशल, अपर सचिव, डेयर एवं सचिव भाकृअनुप; श्री पी.के. पुजारी, अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार डेयर; विशेष आमंत्रित अतिथि, परिषद के वरिष्ठ अधिकारीगण, प्रेस और मीडिया के प्रतिनिधियों, देवियो और सज्जनो।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की 85वीं वार्षिक आम बैठक में भाकृअनुप सोसायटी के सभी सदस्यों और विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करते हुए मुझे हर्ष हो रहा है। आप सभी को नव वर्ष 2014 की शुभकामनाएं। आपकी निरंतर बढ़ती रुचि और रचनात्मक विचारों ने कृषि उत्पादकता और उत्पादन बढ़ाने तथा विभिन्न चुनौतियों पर काबू पाने वाली प्रौद्योगिकियां विकसित करने के लिए नवोन्मेषी और मांग आधारित अनुसंधान कार्यक्रम तैयार करने में बहुमूल्य योगदान दिया है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने देश में सतत् कृषि विकास के लिए प्रौद्योगिकियां विकसित करने वाले एक जीवंत संगठन के रूप में देश की सेवा करते हुए आठ दशक का सफर तय कर लिया है। संगठन के लिए उपयुक्त और प्रतिस्पर्धी मानव संसाधन का चयन करने के लिए अधिकृत भाकृअनुप की संस्था कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल ने भी स्थापना के 40 साल पूरे कर लिए हैं।

महोदय, आपके सक्षम और दूरदर्शी नेतृत्व के तहत परिषद ने कृषि अनुसंधान और शिक्षा के लिए नए संस्थानों की स्थापना की है तथा कुछ संस्थानों की दिशा में बदलाव भी किया गया है। दूरदराज के किसानों तक पहुंच बनाने के लिए नए कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना की गई है तथा कई नई पहल के साथ राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई साझेदारियों को बढ़ावा दिया गया है। महोदय, बारहवीं योजना के लिए वित्तीय आवंटन ग्यारहवीं योजना से दोगुना करने और वैज्ञानिकों से आपके सीधे मिलने व संवाद करने से युवाओं में रचनात्मकता की लहर जाग उठी है।

यह जानकर अच्छा लग रहा है कि इस बार प्रमुख खाद्य सामग्रियों जैसे अनाज, दालें, फल, सब्जियां, दूध, मांस, अंडा और मछली का उत्पादन अब तक का सबसे अधिकतम होने की संभावना है। नई तकनीकों के विकास और उन्हें अपनाने से उत्पादकता में महत्वपूर्ण लाभ मिला है। खेती योग्य क्षेत्र के विस्तार की सीमितताओं को देखते हुए दीर्घकालीन उत्पादन में वृद्धि का मुख्य स्रोत उपज में सुधार है।

उत्पादकता वृद्धि जीवंत कृषि क्षेत्र का एक आवश्यक घटक है परन्तु सुनिश्चित मूल्य संवर्धन के लिए फसल कटाई उपरांत उन्नत रखरखाव, प्रसंस्करण, व्यर्थ पदार्थों में कमी एवं बाजार तक उत्पाद का सही परिवहन अनिवार्य है। भारतीय अर्थव्यवस्था में सकल घरेलू उत्पाद में योगदान की दृष्टि से खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र काफी महत्वपूर्ण है। कृषि और विनिर्माण क्षेत्र में इस क्षेत्र का योगदान सकल घरेलू उत्पाद का 9–10 प्रतिशत है। अक्सर ऐसा होता है कि उच्च उत्पादन होने के बावजूद उत्पादकों को लाभ नहीं मिल पाता क्योंकि वे परंपरागत कटाई उपरांत तकनीकों का प्रयोग करते हैं। विशाल उत्पादन आधार के साथ भारत अपने एक अरब से अधिक आबादी वाले घरेलू बाजार की खाद्य आपूर्ति के साथ ही विश्व के प्रमुख खाद्य आपूर्ति वाले देशों में शामिल हो सकता है। इस प्रयास में हमने कोल्ड स्टोरेज, मूल्य संवर्धन, मेगा फूड पार्क और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की सहायता के लिए बूचड़खानों के आधुनिकीकरण जैसी बुनियादी सुविधाओं के विकास जैसी कई योजनाओं की शुरुआत की है।

उत्पादन परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और गुणवत्ता में खासतौर पर पानी और मृदा में गिरावट, पेड़–पौधों में लगने वाले नए रोगजनकों के उद्‌भव, जीवाश्म ईंधन का घटता भंडार, अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सहयोग और भागीदारी के लिए नए वैश्विक नियमों के कारण कृषि के लिए कई प्रकार के खतरे उत्पन्न हो गए हैं। हमें अपनी कृषि को मजबूत बनाने और उसे सुदृढ़ बनाए रखने के लिए नई चुनौतियों से निपटने की आवश्यकता है। इसलिए आज आधुनिक विज्ञान व तकनीकों के साथ मानव संसाधन विकास और अनुसंधान व विकास में उच्च स्तर के निवेश की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली के तहत विकसित नई प्रौद्योगिकियों और उत्पादों के देश भर में प्रचार–प्रसार, तकनीकों की उत्पादन क्षमता के प्रदर्शन, आकलन और परिष्करण के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 637 कृषि विज्ञान केन्द्र कार्यरत हैं। किसानों को प्रसार सेवाओं के वितरण का लाभ देने और नवोन्मेषी दृष्टिकोण अपनाने के लिए विस्तार रणनीति का संयोजन किया गया है। अंतिम उपयोगकर्ताओं तक प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में सुधार करने के लिए हमें सार्वजनिक–सार्वजनिक और सार्वजनिक–निजी भागीदारी के सहयोग से आईसीटी की क्षमता का पता लगाने और उसके उपयोग करने की जरूरत है।

मैं वार्षिक आम बैठक और भाकृअनुप की सफलता की कामना करता हूं।

धन्यवाद!

Hon'ble Union Minister of Agriculture and Food Processing Industries and President of the ICAR Society, Shri Sharad Pawar Ji, Ministers of Agriculture from States and distinguished members of the Society; members of the ICAR Governing Body; my colleagues, Minister of State, Dr Charan Das Mahant; Dr S. Ayyappan, Secretary, DARE and DG, ICAR; Shri Arvind Kaushal, Additional Secretary, DARE and Secretary, ICAR; Shri P.K. Pujari, Additional Secretary and Financial Advisor, DARE; special invitees, senior officials of the Council, Representatives of press and media, Ladies and Gentlemen!

It is my pleasure to welcome all the members of the ICAR Society and distinguished guests to 85th Annual General Meeting and wish you a very Happy New Year-2014. Your continued interest and constructive ideas have contributed in formulation of innovative, demand driven research programmes to generate technologies for overcoming constraints to enhance agricultural productivity and production.

The Indian Council of Agricultural Research (ICAR) has completed over eight decades of service to the nation and as a vibrant organization, continues to generate technologies for sustained agricultural development in the country. The Agricultural Scientists Recruitment Board, an important wing of the ICAR, mandated for selecting appropriate and competitive human resources for the organization, has also completed 40 years.

Sir, under your able and visionary leadership, the Council has established new institutions of agricultural research and education, reoriented the functioning of some institutes, added new KVKs to reach farmers in the remote corners of the country, launched several new initiatives and fostered new partnerships at the national and international level. Sir, the financial allocations for the XII Plan are twice as that of XI Plan and your personal interactions with the scientists have ignited the spark of creativity in the young minds.

It is good to know that the production of major food items such as cereals, pulses, fruits, vegetables, milk, meat, eggs and fish are likely to be the highest so far. Generation and adoption of new technologies have resulted in significant productivity gains. Given the limitations on the expansion of area under cultivation, the main source of long-term output growth is improvement in yield.

While increased productivity is an essential component of a vibrant agricultural sector, improved post-harvest handling and processing is essential to ensure value addition, reduction in wastage and transporting good quality products to markets. Food Processing Sector forms an important segment of the Indian economy in terms of its contribution to GDP. The sector contributes as much as 9-10 per cent of GDP in Agriculture and Manufacturing sector. Too often, even when the yields are high, producers lose income due to poor postharvest practices. With a huge production base, India can easily become one of the leading food suppliers to the world, while at the same time serving vast growing domestic market of over a billion people. In this endeavour, we have launched several schemes to develop infrastructure for cold chain, storage, value addition, mega food parks and modernization of abattoirs to support the food processing industry.

The production environment is changing at a rapid pace. There are threats to agriculture on account of likely changes in the climate; deterioration in availability and quality of natural resources, especially soil and water; emergence of new plant pathogens; depleting reserves of fossil fuel; new global regulations for international research collaboration and partnerships. We need to address new concerns to strengthen and sustain our agriculture. This calls for application of modern-day science, techniques and tools as well as higher levels of investment in R&D including human resource development.

The ICAR has now 637 KVKs spread across the country to showcase production potential of different technologies and also for assessing, refining and demonstrating new technologies and products developed by the National Agricultural Research System (NARS). The Extension has to be a combination of strategies for augmenting workforce to support delivery of extension services to the farmers, together with adopting innovative approaches. We need to explore and utilize potential of ICTs and synergies through Public-Public and Public-Private Partnerships to improve transfer of technology to the end users.

I wish the AGM and ICAR all success.

Thankyou !